आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 16/06/2025; Accepted: 19/06/2025; Published: 28/06/2025

*कहानी*

# सम्पूर्ण कामयाबी की ओर

**डॉ. नरसिंह राव कल्याणी**
घर नं : 11-4-128
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी
महबूब नगर – 509001
मोबाइल नं : 9492501588

**डॉ. नरसिंह राव कल्याणी , सम्पूर्ण कामयाबी की ओर**, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025**,(147-150) https://doi.org/10.5281/zenodo.15777046

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

आकाश प्रयाग राज के अगले महाकुंभ जो एक सौ चौतालीस वर्ष के बाद आनेवाला है, अपने लैपटाप पर उसका नजारा देख रहा था। किसी के द्वारा कृत्रिम बुद्दिमत्ता के सहारे लगभग दो मिनट का बनाया हुआ वीडियो को -अपना कोई मित्र शेयर किया हुआ देख रहा था। समय रात के लगभग ग्यारह बज रहे थे। वह किसी साफ्टवेर कंपनी में ऊंचे पद पर काम करता है। जिस वीडियो को अभी देखा तो उस के मन में एक खयाल यह आया कि "क्यों न मैं भी अपने प्रांत के मेले या उत्सवों के बारे में वीडियो तैयार करूँ"। उसे लगा कि विचार अच्छा है। फिर वह विचार करते हुये अपने बिस्तर के पास गया। सुबह से कम्पुटर पर काम करते हुये थका हुआ महसूस कर रहा था। सो फिर सोचा कि –"इस प्रकार के विडियोस कैसे बनाना है सर्च करेंगे"। मगर , कमरे का लाइट बुझा कर , ज़ीरो बल्ब ऑन करके वह सो गया।

आकाश की उम्र लगभग पच्चीस वर्ष की है। इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। उसने आई.आई.टी. मुंबई से कम्पुटर विज्ञान में एम.टेख . की भी उपाधि हासिल की है। साथ में स्वर्ण पदक विजेता भी रहा है। एम.टेख.की पढ़ाई के समय ही कैंपस सेलेक्शन में ही यह नौकरी मिल गयी है। यही नहीं , और चार-पाँच कंपीनियों के लिए भी सेलेक्शन हुआ था। मगर उसको इस कंपनी की पैकेज और पदोन्नति की पद्दती अच्छी लगी तो इसी में

ही भर्ती हुआ।इस नौकरी को करते हुये लगभग डेढ़ साल हो रहा है। अभी अकेला है । माँ-बाप की ओर से शादी के लिए दबाव बढ रहा है। आकाश एक-दो साल टालने की बात कर रहा है।

ऐसे आकाश के माता-पिता पढे-लिखे हैं और सरकारी कर्मचारी भी। उनका एकल परिवार है। बस आकाश एक मात्र संतान है उनके लिए।उस दंपति को केवल एक मात्र आशा थी कि उनके पुत्र यानि आकाश को अच्छी शिक्षा दिलाएँ और ऊंचे होदे की नौकरी मिले। इसी आशा को साकार करने के लिए उन दोनों ने उसके बचपन से ऐसे परवरिश करना शुरू किया कि कहीं पढ़ाई में वह पिछड़ न जाये। पति-पत्नी के आशाओं के अनुरूप ही आकाश पढ़ता गया। प्रत्येक कक्षा में वह अव्वल आता ही गया। पाठशाला के शिक्षक आकाश की प्रतिभा को देख कर उसे सहपाठ्यचर्या व पाठ्येतर संबंधी गतिविधियों में शामिल करना चाहते थे ताकि उनके पाठशाला का नाम रोशन हो। मगर आकाश के अभिभावक इतने सक्त थे कि पढ़ाई को छोड़कर किसी अन्य गतिविधियों में जैसे खेलकूद, चित्र कला, गीत ,भाषण आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेने की अनुमति नहीं देते थे। एक बार स्कूल को राष्ट्रीय स्तर का निबंध प्रतियोगिता संबंधी सर्कुलर आया था । जिस में नियम था कि प्रत्येक पाठशाला से मात्र एक विद्यार्थी प्रतियोगिता में शामिल हो सकता है। शिक्षकों का मत था कि आकाश को प्रतिभागी के रूप में भेजा जाय । क्योंकि उन्हें भरोसा था कि आकाश इस प्रतियोगिता के लिए योग्य है और पुरस्कार भी हासिल कर सकता है। इसी उम्मीद के साथ शिक्षकगण प्रिंसिपल के चांबर में पहुंचे। प्रतियोगिता में आकाश को भेजने का सुझाव उनहोंने प्रिंसपल को दिया। यह सुझाव प्रिंसिपल को भी अच्छा लगा। तुरंत उसने आकाश के मता-पिता को पाठशाला को आने के लिए मोबाइल पर सूचना दी। प्रतियोगिता हैदराबाद में अगले सप्ताह थी। हैदराबाद में इस प्रतियोगिता में जो छात्र प्रथम,द्वितीय और तृतीय स्थान पाते हैं उन्हें फाइनल के लिए दिल्ली जाना पड़ेगा। वहाँ पर राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले विजेताओं को क्रमशः तीन, दो और एक लाख रुपये की नगद राशि पुरस्कार के रूप में दिया जाएगा ।

प्रिंसिपल से सूचना पाते ही आकाश के माता-पिता राधिका और दीपांकर जो उसी गाँव में कार्यरत थे, पाठशाला को पहुँच गए। चांबर में दो-चार- अध्यापकों के साथ प्रिंसिपल महोदयजी प्रतीक्षा कर रहे थे। दीपांकर और राधिका ने प्रिंसिपल व शिक्षकगण को अभिवादन किया। सभी ने प्रति अभिवादन किया। सभी शिक्षक इन्हें अच्छी तरह से जानते थे क्योंकि ये दंपति अक्सर अपने बेटे की प्रगति के बारे में शिक्षकों से चर्चा करने स्कूल आया करते थे। प्रिंसिपल जी ने सीधे विषय पर आया। आकाश को निबंध प्रतियोगिता को भेज ने की बात दंपति को बता दी। दंपती ने एक मत से सुझाव को ठुकरा दिया और कहा कि आकाश अब नवीं में पढ़ रहा है। अगले वर्ष दसवीं में जाएगा । बोर्ड की परीक्षाएँ होंगीं । उसकी तैयारी तो अभी से ही तो करनी पड़ेगी। अतः हम आकाश को नहीं भेजेंगे । प्रिंसिपल जी बहुत समझाने पर भी वे नहीं माने। प्रिंसिपल ने शिक्षकों से आग्रह किया कि कोई दूसरे छात्र को चुना जाय।

राधिका-दीपांकर दोनों प्रिंसिपल के चांबर से बाहर आए और अपने दुपहिये वाहन पर बैठ कर घर चले गए। दोनों ने अपने निर्णय पर कायम थे। उनके अनुसार पाठ्यपुस्तकों की पढ़ाई ही पढ़ाई है और भविष्य में काम में आने वाली वही है। बाकी के जीतने भी कार्यक्रम पाठशाला में होते हैं वे सब समय की बरबादी के हैं।इसलिए वे आकाश को किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं लेने देते थे।

राधिका-दीपांकर जैसे चाह रहे थे आकाश भी वैसे ही करता गया। किसी बात का विरोध उसने नहीं किया।अपनी इच्छाओं को दबाकर रखा और पढ़ाई में हमेशा अव्वल आते गया। कभी भी अपने सहपाठियों के साथ खेलने या विहार यात्रा पर नहीं जाता था । गली के लड़कों के साथ भी बहुत कम मिला करता था। कुल मिलकर दसवीं की बोर्ड परीक्षाओं में, इंटर में, आई.आई.टी. मैन्स और अड्वान्स प्रवेश परीक्षाओं में अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण हुआ और आई.आई.टी.मुंबई में कम्पुटर विज्ञान में उसे सीट मिल गयी।

आकाश के मता-पिता फुले नहीं समा रहे थे। आकाश आई.आई.टी.मुंबई में कम्पुटर विज्ञान में भर्ती हो गया। आकाश के आडमिशन के समय राधिका-दीपांकर भी मुंबई गए थे।अब रोजाना मोबाइल पर आकाश से बातचीत होती थी । जब कभी आकाश घर आता था तब भी अपने मित्रों से कम ही मिलता थ। उसे माता-पिता बार-बार कहते थे कि "पढ़ाई पर ध्यान दिया कर। समय का सदुपयोग कर। दोस्तों का क्या है उनसे कभी भी मिल सकते हैं। अब का समय जीवन का महत्वपूर्ण मोड है"। फिर राधिका-दीपांकर जैसा चाह वैसे ही हुआ । आकाश को इंजीनिरिंग की पढ़ाई के समय ही एक बहू राष्ट्रीय कंपनी से ऑफर मिल गया। पैकेज भी अच्छा-खासा था। जैसे ही इंजीनिरिंग की पढ़ाई खत्म हुई , वहीं मुंबई में ही नौकरी में भर्ती हो गया।

सुबह उठकर नाह-धोकर आफिस के लिए निकाल पढ़ा । ऑफिस को पहुँचते ही अपने कैबिन में लापटाप रख कर , अपने एक सहकर्मी रविकान्त से मिलकर कृत्रिम बुद्दिमत्ता से कैसे वीडियो बना सकते हैं विचार-विमर्श किया। फिर उसने अपने कैबिन को आ कर अपने आधीनस्त टीमों को काम संबंधी सलाह व सूचनाएं दी। फिर कृत्रिम बुद्दिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटिलिजेनेस) के नोट्स ऑनलाइन में सर्च करने लगा। दोपहर में ऑफिस के ही काम में व्यस्त रहा। जैसे ही ऑफिस से अपने कमरे को लौटा तो कृत्रिम बुद्दिमत्ता(आर्टिफिशल इंटलीजेन्स) के आधार पर अपने गाँव , अपने उत्सव , त्योहार, खेल आदि संबंधी वीडियो बनाने का काम शुरू किया।

फेसबुक , वाट्सआप , इंस्टाग्राम आदि से अपने बचपन के दोस्तों , रिश्तेदारों के चित्रों को इकट्ठा किया। और कोशिश करने लगा की दिवाली के समय की आतिशबाज़ी का दृश्य , दशहरे की रामलीला मंचन का दृश्य , श्री कृष्णाष्टमी के समय की दहि-हांडी को फोड़ने का दृश्य , गणेशोत्सव के विसर्जन समारोह के विभिन्न झांकियों का चित्रण, बचपन के खेलकूद के, तैरने के, सायकिल सीखने के,गुल्ली डांडा खेलने के , गीत,निबंध,वक्तृत्व आदि प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतने के , पिकनिक पर जाने के - ऐसे न जाने कितने बचपन के याददाश घटनाओं का ऐसे वीडियो तैयार किया - जो बीस साल पहले कैसे होता था और अब से बीस साल के बाद भविष्य में कैसे इनका आजोजन होता होगा - आदि प्रसंगों का दो-दो मिनटों का वीडियो तैयार करने लगा।

आश्चर्य ! अद्भुत ! हर प्रसंग या घटना का वीडियो इतना अच्छा तैयार हुआ है कि किसी को शक नहीं होता है कि ये दस-पंद्रह साल के पहले की हैं। और तो और भविष्य में बीस साल बाद मनुष्यों के चहेरे कैसे बदले हुये रहेंगे ये देख कर कोई भी दंग रहे बिना नहीं रहा सकता। क्या कमाल है कृत्रिम बुद्दिमत्ता(आर्टिफिशल इंटलीजेन्स) की ! आकाश को अपने किए कामों पर गर्व महसूस होने लगा। कितने अद्भुत वीडियो तैयार हुये हैं। जो घटनाएं दस-पंद्रह वर्ष पहले घटित हुये हैं उनका चित्रण - जो कल्पना पर आधारित है - हुब हू लगता है। और यह करामात देखिये कि हर वीडियो में आकाश विशेष रूप से दिखाई दे रहा है । जैसे दही की हांडी को

आकाश फोड़ते हुये, गणेश विसर्जन यात्रा को स्वयं नेतृत्व करते हुये, कबड्डी का कप्तान बन कर पुरस्कार लेते हुये, ऐसे हर एक प्रसंग में मुख्य पात्र के रूप में आकाश दिखाई दे रहा है।

आकाश सोच रहा था कि "अब मैं इन्हें अपने गाँव के सभी मित्रों और परिचित लोगों को भेजूँगा। सब लोग इन्हें देख कर अचम्बित हो जाएंगे। मेरी कृत्रिम बुद्दिमत्ता पर की पकड़ को देख कर ताजूब हो जायेंगे ।" आकाश घड़ी की ओर देखा तो रात के ग्यारह बज रहे थे। उसने सोचा की सुबह उठ कर इन्हें मेल,फसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स ,वाट्सएप सभी पर शेयर कर दूंगा। ऐसा सोचते हुये बिस्तर की ओर जाते हुये लाईट भुझाने के लिए बटन पर उंगली रखा तो अचानक वहीं पर पड़ा समाचार पत्र का आध्यात्म विषय संबंधी पन्ना दिखाई दिया। उसे पढ़ने की ईच्छा हुई। उसे हाथ में लेकर नजरें घुमाईं। एक लेख पर उसकी निगाहें रुकीं। लेख का शीर्षक था "जीवन में कामयाबी" । उस लेख को पढ़ने लगा। लेख का सार यही था कि " एक सफल मानव उसे कहा जाता है जिसने जिंदगी के हर पहलू का लुफ्त उठा चुका हो। जिंदगी के हर क्षण का अनुभव कर चुका हो। यह जरूरी नहीं की हर पहलू या लम्हा अच्छा ही हो । बस! हर रस का अनुभव करें, यह जरूरी है। कुछ पाने के लिए बहुत सारे को छोड़ने की जरूरत नहीं है। जीवन में हर रस का अनुभव करना है। बचपन तो रसों का खजाना है । बचपन के हर कर्म में भविष्य रूपी वृक्ष के बीज छुपे होते हैं। परिवार, मित्र, पाठशाला और समाज के द्वारा अच्छे कर्मों का अंकुरण होता है। सर्वांगीण विकास ही तो जीवन का लक्ष्य है। सर्वांगीण विकास से ही समाज में व्याप्त निराशा, अत्याशा, परेशानी, असूया , असंतुष्टि, चिड़चिड़ापन आदि को दूर किया जा सकता है। आनंद मात्रा नहीं, गुणवत्ता है। इस लिए परंपरागत उत्सवों, त्योहारों और खेलों में भाग लेते रहना चाहिए। जीवन का सच्चा आनंद इन्ही से मिलता है। आनंद ही जीवन की कामयाबी है।" आकाश लाइट बूझा कर बिस्तर पर लेट गया। बारह बज ने को आए थे। आकाश को नींद नहीं आ रही थी। अभी पढ़ा हुआ लेख का असर उसके दिमाग पर छाया हुआ था। लेख के आधार पर अपने जिंदगी का जांच कर रहा था कि कहाँ तक खरा उतरता है वह । उसे लगा कि "उसकी जिंदगी सर्वांगीण विकास से कोसों दूर था। बस, एक पढ़ाई को छोड़ कर जीवन के किसी दूसरे हिस्से में वह झाँका तक नहीं। फिर उसे याद आया कि "क्या अभी तक जो वीडियो बनाया हूँ उसमे तो मैं नायक की तरह नजर आता हूँ। यह तो सच से बहुत दूर है। मैंने कभी किसी मेले में,किसी उत्सव में, किसी खेल में भागीदार हुआ ही नहीं। ये वीडियोस तो सरासर झूठ हैं। नहीं, अब मैं किसी को भी इन झूठे वीडियोस को शेयर नहीं करूंगा। यह मेरा हकीकत नहीं है।अब मैं यथार्थ की जिंदगी जीना चाहता हूँ। अब तक जो नुकसान हुआ है ,होने दो। अब मैं खुशियों को बटोरुंगा ।अब से साथियों को प्रत्यक्ष रूप से मिला करूंगा। ऐसा सोचते समय उसकी आँखें दीवार पर टंगी कैलेंडर पर गईं। मार्च महीने की एक तिथि लाल रंग में थी। । जाकर नजदीक से देखा तो पता चला कि उस दिन होली के कारण छुट्टी है।उसका चहेरा एकदम खिल गया। तुरंत लापटाप ले लिया और होली मनाने के लिए अपने गाँव के लिए टिकट बुक कर दिया।अब किसी की शिकायत नहीं रहेगी कि वह किसी से मिलता झूलता नहीं है। इसकी शुरुवात होली पर्व से ही होगी। अब आकाश को ऐसा लग रहा था कि - मानो वह अधूरी कामयाबी से सम्पूर्ण कामयाबी की ओर प्रस्थान करने लगा है।

**********